१५: नीलकंठ

प्रश्नावली

<u>निबंध से-</u>

प्रश्न 1- मोर-मोरनी के नाम किस आधार पर रखे गए?

प्रश्न 2- जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चों का किस प्रकार स्वागत हुआ?

प्रश्न 3- लेखिका को नीलकंठ की कौन-कौन सी चेष्टाएँ बहुत भाती थीं?

प्रश्न 4- 'इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा'-वाक्य किस घटना की ओर संकेत कर रहा है?

प्रश्न 5- वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालीघर में बंद रहना असहनीय क्यों हो जाता था?

प्रश्न 6- जालीघर में रहनेवाले सभी जीव एक-दूसरे के मित्र बन गए थे, पर कुब्जा के साथ ऐसा संभव क्यों नहीं हो पाया?

प्रश्न 7- नीलकंठ ने खरगोश के बच्चे को साँप से किस तरह बचाया? इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

निबंध से आगे-

प्रश्न 1- यह पथ एक "रेखाचित्र" है! रेखाचित्र की क्या क्या विशेषताएं होती है! जानकारी प्राप्त कीजिये लेखिका की किसी और रेखाचित्र को पढ़िए!

प्रश्न 2- वर्षा ऋतू में जब आकाश में बदल घिर आते है तब मोर पंख फैलाकर धीरे-धीरे मचलने लगता है- यह मोहक दृश्य देखने का प्रयास कीजिये!

प्रश्न 3- पुस्तकालय से ऐसी कहानियो, कविताओं अथवा गीतों को खोजकर पढ़िए जो वर्षा ऋतू और मोर के नाचने से सम्वन्धित हो!

अनुमान और कल्पना-

प्रश्न 1- निबंध में आपने ये पंक्तियाँ पढ़ी हैं-'मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गई। जब गंगा की बीच धार में उसे प्रवाहित किया गया तब उसके पंखों की चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा।'-इन पंक्तियों में एक भावचित्र है। इसके आधार पर कल्पना कीजिए और लिखिए कि मोरपंख की चंद्रिका और गंगा की लहरों में क्या-क्या समानताएँ लेखिका ने देखी होंगी जिसके कारण गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर पंख के समान तरंगित हो उठा।

प्रश्न 2- नीलकंठ की नृत्य भंगिमा का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिये!

भाषा की बात-

प्रश्न 1- 'रूप' शब्द से कुरूप, स्वरूप, बहुरूप आदि शब्द बनते हैं। इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों से अन्य शब्द बनाओ-

प्रश्न 2- विस्मयाभिभूत शब्द विस्मय और अभिभूत दो शब्दों के योग से बना है। इसमें विस्मय के य के साथ अभिभूत के अ के मिलने से या हो गया है। अ आदि वर्ण हैं। ये सभी वर्ण-ध्वनियों में व्याप्त हैं। व्यंजन वर्णों में इसके योग को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जैसे- क्+अ = क इत्यादि। अ की मात्रा के चिह्न (ा) से आप परिचित हैं। अ की भाँति किसी शब्द में आ के भी जुड़ने से अकार की मात्रा ही लगती है, जैसे- मंडल + आकार= मंडलाकार। मंडल और आकार की संधि करने पर(जोड़ने पर) मंडलाकार शब्द बनता है और मंडलाकार शब्द का विग्रह करने पर (तोड़ने पर) मंडल और आकार दोनों अलग होते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के संधि-विग्रह कीजिए-

उत्तर

<u>निबंध से-</u>

उत्तर 1- मोर की गर्दन बहुत दुंदर और नीली थी इस कारण उसका नाम नीलकंठ रखा गया जबकि मोरनी सदैव मोर के साथ उसकी छाया की तरह रहती थी इस आधार पर मोरनी का नाम राधा रखा गया।

उत्तर 2- जाली के बड़े घर में पहुँचने पर मोर के बच्चो का स्वागत बहुत अच्छे से हुआ बड़े के सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया ऐसा लगा की मनो कोई नव विवाहित जोड़े का आगमन घर में हुआ हो। मोर के बच्चो को देखकर कबूरत अपना नाचना छोड़कर मोर के बच्चो के पीछे ही गुंटूर गु करने लगे ऐसा लग रहा था जैसे की मोर के बच्चो को आने पर अपनी सहमति व्यक्त क्र रहे हो! बड़े के सभी सदस्य मोर के बच्चो को देखना चाहते थे, खरगोश के बच्चे तो मोर के बच्चो के चारो तरफ खेलने ही लग गए थे जबकि खरगोश एक क्रम में बैठकर मानो मेहमानो का निरीक्षण कर रहे हो। तोते ने एक आंख बंद करके मेहमानो का निरीक्षण किया एवं स्वागत किया।

उत्तर 3- लेखिका को नीलकंठ की निम्नलिखित चेष्टाएँ बहुत भाती थी-

1- नीलकंठ बहुत दयालु स्वाभाव का था जिस कारन वह सदैव सबकी रक्षा करता था।

2- वर्षा ऋतू के समय में नीलकंठ अपने पंख फैला कर नाचता और राधा उसका साथ देती थी ये बात लेखिका को बहुत भाती थी और नीलकंठ को भी शायद इस बात का अंदाज़ा लग गया था इसीलिए जब भी लेखिका आती तो नीलकंठ उसे प्रसन्न करने के लिए नाचने के मुद्रा में खड़ा हो जाता था।

3- नीलकंठ को पता था की किसके साथ कैसे व्यवहार करते है उसने खरगोश के बच्चो को खाने आये सांप के टुकड़े कर दिए थे जबकि लेखिका के हाथ से भुने चने कहते समय वो उसे तनिक भी हानि नहीं पहुँचाया करता था।

4- इसके अतिरिक्त लेखिका को नीलकंठ का गर्दन उठा कर इधर उधर देखना, सर तिरछा करके बात सुन्ना और गर्दन झुका कर दाना चुगना और पानी पीना काफी भाता था।

उत्तर 4- " इस आनन्दोत्स्व की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा" वाक्य लेखिका के कुब्जा मोरनी को लेकर आने की घटना की और इशारा करता है। लेखिका एक दिन एक बीमार कुब्जा मोरनी को घर ले आयी फिर उसके ठीक होने के पश्चात उसे भी जाली घर में सभी जानवरो के साथ भेज दिया गया परन्तु कुब्जा बाड़े के सभी जानवरो के साथ घुल मिल नहीं पायी। वह राधा को और किसी भी अन्य जानवर को नीलकंठ के समीप नहीं आने देती थी एवं अगर कोई आये तो उसे अपनी चोंच से मार कर घायल कर देती थी। उसने ईर्ष्या के कारन ही राधा के अंडे फ़ूड दिए थे ये बात जब नीलकंठ को पता लगी तो वह बहुत दुखी रहने लगा एवं अंततः उसका अंत हो गया एवं बाड़े की रौनक ही चली गयी!

उत्तर 5- वसंत ऋतु मोर की प्रिय ऋतु होती है क्योंकि वसंत में सभी पेड़ो पर नए पत्ते आते हैं, आम पर बौर आता है, अशोक लाल नए पत्तो से भर जाते हैं एवं वातावरण में सुगंध होती है। इसी कारण वसंत ऋतु में नीलकंठ के लिए जालघर में बंद रहना असहनीय हो जाता था।

उत्तर 6- जालीघर में रहने वाले सभी जानवर मिलनसार स्वभाव के थे इसके विपरीत कुब्जा ईर्ष्यालु प्रवृत्ति की थी! कुब्जा को किसी का भी नीलकंठ के समीप आना पसंद नहीं था एवं वो काफी सारे जानवरो को चोंच मार कर घायल कर चुकी थी ! जिस कारण नीलकंठ भी उससे डर कर भागता था! उसके इस ईर्ष्यालु स्वभाव के कारण ही कुब्जा किसी की मित्र नहीं बन पायी!

उत्तर 7- एक दिन बाड़े में एक सांप कहीं से घुस आया और उसने खेल रहे खरगोश के एक बच्चे को खाने के लिए उसे पीछे से जकड़ लिया, जिससे खरगोश का बच्चा ची ची करने लगा। इस क्रंदन से सो रहे नीलकंठ की आँख खुली और वो झूले से तुरंत नीचे आया और उसने सांप की गर्दन को बहुत सतर्कता से अपने पंजों में जकड़ लिया एवं अपनी चोंच से सांप पर तब तक वार किये जबतक वह अधमरा नहीं हो गया। जिससे खरगोश का बच्चा स्वातंच हो गया।

इस घटना के आधार पर नीलकंठ के स्वभाव की निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान होता है-

1- नीलकंठ बड़े का एक सजग एवं सचेत मुखिया था, जिस प्रकार घर के मुखिया की जिम्मेदारी होती है की सब सुरक्षित रहें इसी प्रकार नीलकंठ भी सभी जानवरो की सुरक्षा के लिए सचेत था!

2- नीलकंठ बहुत समझदार था उसने जिस प्रकार से सांप की गर्दन पंजो से पकड़ी उससे सांप खरगोश के बच्चे को खा नहीं पाया एवं खरगोश का बच्चा बच गया!

3- नीलकंठ बहुत साहसी मोर था, उसने जल्दी से बिना डरे हुए सीधे सांप पर हमला किया एवं बच्चे को सुरक्षित बचा लिया!

4- नीलकंठ बहुत दयालु था, वह पूरी रात खरगोश के बच्चे को अपने पंखो से गर्म रखता रहा!

<u>निबंध से आगे-</u>

उत्तर 1- जब एक साहित्यकार शब्दों के माध्यम से साहित्य में किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना का सजीव उल्लेख करके एक चित्र बनाता है तब उसे रेखा चित्र कहते है!

रेखाचित्र भावनात्मक रूप से सरल होते हैं एवं इनमे प्रायः छोटी छोटी घटनाओं का उल्लेख होता है! महादेवी वर्मा जी द्वारा लिखित अन्य रेखाचित्र स्मृति की रेखाएं एवं अतीत के चलचित्र है!

उत्तर 2- माता पिता के साथ किसी चिड़ियघर में जाकर ये दृश्य देखा जा सकता है अथवा इंटरनेट पर मोर के नाचने की काफी वीडियोस उपलब्ध हैं जिससे छात्रों का ज्ञानवर्धन होता है!

उत्तर 3- छात्र स्वयं करें!

<u>अनुमान और कल्पना-</u>

उत्तर 1- निबंध में यह भाव चित्र उस समय का है जब लेखिका नीलकंठ के मृतक शरीर को गंगा की बीच धारा में प्रवाहित करने जाती है! मोर के पंखो की चंद्रिकाएँ सुनहरे और गहरे रंग की होती है एवं जब लेखिया नीलकंठ को गंगा की बीच धरा में प्रवाहित करती है तो उसके पंख फ़ैल क्र पानी में तैरने लग जाते हैं! नदी में पानी के लहरों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो नीलकंठ के फैले हुए पंखो की चंद्रिकाएँ और चमकने लगती हैं एवं ऐसा लगता है जैसे की गंगा का चौड़ा पाट मानो मयूर की भांति तरंगित हो उठा हो!

उत्तर 2- मेघो की छाया में वर्षा होने की अनुभूति होने मात्र से ही नीलकंठ अपने इंद्रधनुष सरीखे रखो को पंडलकार खड़ा करके जो नाचता था उस गति में सहज ही एक ले एवं ताल होता था! कभी आगे जाता कभी पीछे , दाए बाएं होकर कभी कभी ठहर जाता था! नीलकंठ के नृत्य को देखने के लिए लेखिका भी लालायित रहती थी!

भाषा की बात-

उत्तर 1-

1- गंध- सुगंध, दुर्गन्ध, गंधक
2- रंग- रंगीन,रंगहीन, बेरंग, रंगरोगन
3- फल- सफल, विफल, असफलता, असफल
4- ज्ञान- विज्ञान,सद्ज्ञान,अज्ञान

उत्तर 2-

संधि	विग्रह
नील + आभ = नीलाभ	सिंहासन = सिंह+ आसन
नव + आगंतुक = नवागंतुक	मेघाच्छन्न = मेघ+ आछन्न